वार्षिक 200/- रुपये | अप्रैल 2026 | वर्ष 28 | अंक 06 | पृष्ठ - 28 | मूल्य 20/-रु.

गोसम्पदा

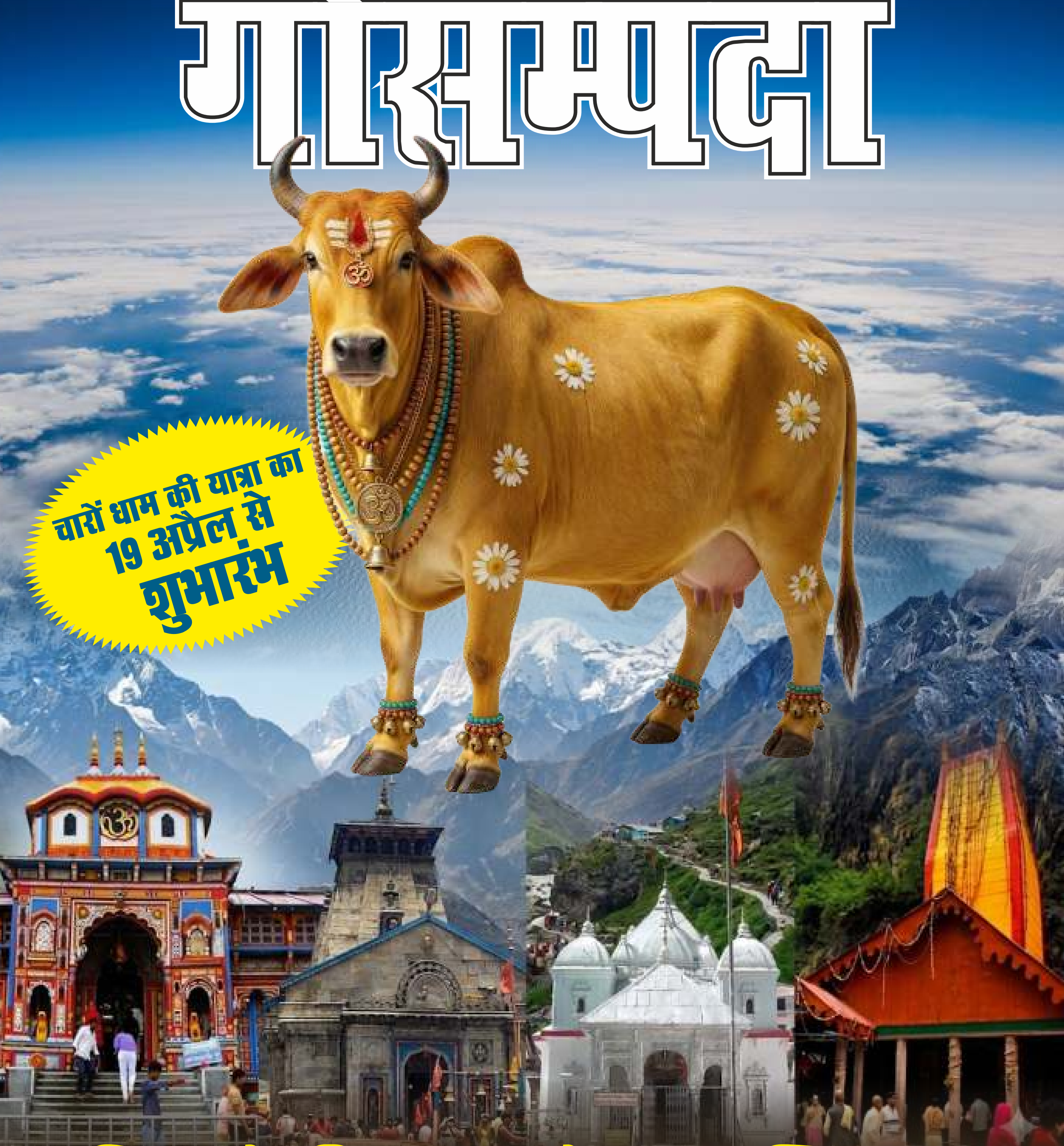

चारों धाम की यात्रा का 19 अप्रैल से शुभारंभ

हिन्दुओं की आस्था के साथ खिलवाड़

पवित्र-पावन गंगा मैया को अपवित्र करने का षड्यंत्र

सम्पादकीय

हिन्दुओं की आस्था के साथ खिलवाड़

पवित्र माह 'रमजान' के दौरान गतमाह देश की साँस्कृतिक राजधानी काशी (वाराणसी) में कुछ मुस्लिम युवकों द्वारा पवित्र–पावन गंगा नदी में नौका विहार करते हुए "रोजा इफ्तार पार्टी" मनाई गई। सुनियोजितपूर्वक पार्टी में मांसाहारी भोजन खाया गया और मांस के बचे अवशेष "गंगा मैया" में ही फेंककर उसे अपवित्र–दूषित करने का प्रयास किया गया, जो घोर–अक्षम्य अपराध होने के साथ ही करोड़ों हिन्दुओं की आस्था के साथ खिलवाड़ भी है। इस घटना का **'वीडियो' सोशल मीडिया** में प्रसारित होने के बाद पुलिस द्वारा मामला दर्ज कर 14 युवकों को गिरफ्तार किया गया। इस घटना को लेकर हिन्दू संगठनों–संस्थाओं में भारी आक्रोश है। उन्होंने आरोपियों के खिलाफ सख्त–से–सख्त कार्यवाही करने की मांग की है। प्राप्त सूचना के अनुसार 'भारतीय जनता युवा मोर्चा के महानगर अध्यक्ष रजत जायसवाल जी द्वारा एफआईआर कराने पर कोतवाली में पुलिस द्वारा मामला दर्ज किया गया। हालांकि दूसरी ओर "अंजुमन इंतेजामिया" नामक संस्था ने इस घटना की घोर निंदा की है, जबकि कांग्रेस सहित अन्य राजनीतिक दलों और अन्य धार्मिक सामाजिक संस्थाओं व साधु–संतों द्वारा इस संदर्भ में किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं सुनाई दी, कुछ को छोड़कर। वस्तुतः यह ऐसी घटना है जिसके विरोध में सम्पूर्ण हिन्दू समाज को संगठितरूप से तत्काल आवाज उठाकर सख्त विरोध करना चाहिए था। समीचीन तो यह होगा कि इस घटना का सुप्रीम कोर्ट (सर्वोच्च न्यायालय) स्वयं संज्ञान लेकर यथाशीघ्र सुनवाई कर अपराधियों को ऐसी कठोर सजा दे ताकि पुनः कोई भी इस प्रकार का दुष्कृत्य करने का साहस न कर सके, क्योंकि यह करोड़ों–करोड़ हिन्दुओं की आस्था–श्रद्धा का प्रश्न है। साथ ही "पावनी गंगा मैया" की पवित्रता को भी अक्षुण्ण बनाए रखा जा सके।

महान गोभक्त फरसा वाले बाबा की हत्या

'फरसा वाले बाबा' के नाम से सुविख्यात महान गोभक्त चंद्रशेखर जी की गत माह कथितरूप से षड्यंत्रपूर्वक हत्या कर दी गई। स्मरण रहे, चंद्र शेखर बाबा ने उन्नीस वर्ष की उम्र में ही सांसारिक जीवन त्यागकर संन्यास ले लिया था। उन्होंने अयोध्या–राम मंदिर आंदोलन की कारसेवा में भी भाग लिया था। तदुपरांत अपना संपूर्ण जीवन गोरक्षा–सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होंने गोरक्षकों की एक बड़ी टीम बना ली थी, जो गोवंश रक्षा के लिए अहिर्निश (दिन–रात) सक्रिय रहती थी। उनके हाथ में हमेशा **फरसा** रहता था, इसलिए वह "फरसा वाले बाबा" के नाम से जाने जाते थे। गोवंश हत्या–तस्करी की सूचना मिलते ही बाबा स्वयं गोरक्षकों के साथ त्वरित पहुंच जाते थे। गोवंश–तस्करी के अनेक प्रयासों को उन्होंने टीम के साथ असफल किया, जिसके कारण गोवंश तस्कर–हत्यारे उनके घोर शत्रु बन गये थे। वर्ष 2012 और 2015 में उन पर जानलेवा हमला कर उनकी हत्या करने की कोशिश भी की गई। गोमाता की कृपा से उन हमलों में वे बाल–बाल बच गये। बावजूद इसके अपने गोरक्षा मिशन से वे कभी डिगे नहीं। 'भय–डर' शब्द उनके जीवन में थे ही नहीं। इस प्रकार जीवित रहते हुए उन्होंने हजारों गोवंश के प्राणों की रक्षा की। उनकी एक गौशाला भी है, जिसमें बचाई गई लगभग 400 गायों की देखभाल होती है। यह गौशाला उनको प्राणों से भी अधिक प्रिय थी। उनकी हत्या के बाद सभी गोभक्तों–गोप्रेमियों में भारी क्षोभ है। उन्होंने इस घटना की जांच सीबीआई से कराने की मांग की है। हालांकि फरसा वाले बाबा अब इस संसार में नहीं हैं, लेकिन ब्रज की सड़कों पर उनकी रात्रि की गश्त और गोवंश की रक्षा का जुनून हमेशा जिंदा रहेगा। गोरक्षा विभाग, विश्व हिन्दू परिषद की ओर से उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति आत्मिक श्रद्धांजलि। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि अपने गोरक्षा के मिशन को पूर्ण करने के लिए उन्होंने किसी–न–किसी स्थान पर पुनः जन्म ले लिया होगा।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष – 28   अंक-06   अप्रैल – 2026   पृष्ठ – 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक : देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 8130049868
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी
9811111602

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना
'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि
एक प्रति : रु. 20/–
वार्षिक : रु. 200/–
आजीवन : रु. 2000/–

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
वर्तमान युद्ध की स्थिति में ऊर्जा संकट का समाधान करने में सक्षम है गोवंश	04
प्रकृति की प्रतिकूलता का परिणाम ही प्रलय	08
गाय देवत्व, ओज और इन्द्रत्व देने में सक्षम	10
ग्रीष्म ऋतु एवं पंचगव्य	13
गाय की सुरक्षा हर नागरिक का परम कर्तव्य	15
बीफ पर फैलाया जा रहा भ्रम गाय पर एक खरोंच भी बर्दाश्त नहीं : योगी	17
गोरक्षा व गोआश्रय आत्मनिर्भरता में योगदान देने वाली विभूतियां होंगी सम्मानित : मुख्यमंत्री	18
महान गोरक्षक फरसा वाले बाबा की सुनियोजित हत्या ?	19
गोवंश संरक्षण कानून के लिए साधु-संतों ने उठाई आवाज	20
The Ancestral Anchor : The Social and Psychological Resonance of Indigenous Cow Conservation	22
Mother Cow and Her Glorious Diversity	24

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं–

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर – 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011–26174732

हरीशंकर दीक्षित (पथिक)

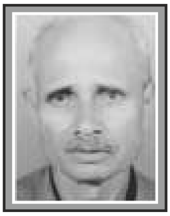

वर्तमान युद्ध की स्थिति में ऊर्जा संकट का समाधान करने में सक्षम है गोवंश

गोवंश है हमारा धार्मिक सामाजिक और आर्थिक आधार'' शीर्षक नामक लेख जो पत्रिका के अगस्त 2024 अंक में प्रकाशित हुआ था, में मैंने अब्दुल रहीम खानखाना की चेतावनी **''रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि''** का उल्लेख करते हुए लिखा था कि आज की वैश्विक दशा ऐसी है जिसके कारण कभी भी विश्वयुद्ध हो सकता है। ऐसी दशा उत्पन्न होने से पूर्व हमें खनिज तेल की उपलब्धता पर विचार करना चाहिए। यदि हम विचार करें तो हम उपरोक्त उपदेश के लोकमंगलकारी भाव को समझकर फिर से परम्परागत कृषियन्त्रों को उन्नतकर बैल आधारित कृषि करना प्रारम्भ कर सकते हैं।

आज मात्र लगभग डेढ़ वर्ष में ही हमारे सामने उक्त लेख में वर्णित आशंका यथार्थ रूप में उपस्थित है। कल्पना कीजिये कि यदि वर्तमान दशा इतनी भीषण—भयावह हो जाये कि खनिज तेल का लगभग अभाव हो जाये तब हमारी वर्तमान मशीन आधारित कृषि की क्या दशा होगी? आज हमारे पास न तो बैल है और न ही जोतने की कला के मर्मज्ञ हलवाहे ही हैं। हलधर बलराम और गोपाल कृष्ण की सन्तानें हम लोग गोवंश को इतना उपेक्षित—तिरस्कृत कर चुके हैं कि आज हमारा लोकमंगलकारी, सर्वदेवमय, मातृ—पितृवत आदरणीय गोवंश लगभग विलुप्ति की कगार तक पहुँच चुका है। कुछ कथावाचक, धर्माचार्य और संवेदनशील संस्थायें आश्रयस्थलों में इनका संरक्षण करने का प्रयास अवश्य कर रही हैं, किन्तु गोशक्ति—सम्पदा का समुचित उपयोग न कर पाने के कारण इनका प्रयास पत्तों पर पानी के छिड़काव जैसा है जो मूल तक न पहुँचने के कारण

आज की वैश्विक दशा को देखकर हमारे धर्माचार्यों को चाहिये कि जनजागृति के लिये भ्रमण करते हुए राजनेताओं को भी जाग्रत करने का कार्य करें, जिससे भविष्य में खनिज तेल के अभाव का दुष्प्रभाव हमारी कृषि पर न पड़े। यदि हम सचेत होकर प्रयत्नशील नहीं हुए तो भविष्य में हमें भूखे मरने जैसी स्थिति का सामना करना पड़ेगा और अनगिनत लोग भूख से व्याकुल होकर तड़प—तड़प कर मरेंगे।

निरर्थक है। लगभग यही दशा राजकीय गोआश्रय स्थलों की भी है।

मैंने अपने लगभग प्रत्येक लेख में गोवंश संरक्षण का एकमात्र ठीक उपाय इसकी शक्ति–सम्पदा का सदुपयोग करना बताया है। यदि हम ऐसा करेंगे तभी हमारे गोवंश को उसका वाँछित आश्रयस्थल अर्थात् हमारे घर में सम्माननीय स्थान मिल सकेगा। इसके अतिरिक्त अन्य समस्त उपाय निरर्थक ही सिद्ध होंगे, जैसे कि आज आश्रय स्थलों में स्पष्ट दिखायी दे रहा है। इन आश्रय स्थलों में नरवत्सों का उपयोग न होने के कारण वे सर्वथा भार ही प्रतीत होते हैं। यदि आश्रय स्थल उन्नत कृषि यन्त्रों तथा कोल्हुओं आदि में **नर वत्सों** का उपयोग करें तो कृषि तथा तेल–गुड़ उद्योगों द्वारा लोगों को रोजगार देकर लाभकारी कृषि तथा कुटीर उद्योगों द्वारा कृषकों तथा उद्यमियों का ध्यान इस ओर खींचकर उन्हें ऐसा करने के लिये प्रोत्साहित भी कर सकते हैं।

हमारे मठ–मन्दिरों में अकूत सम्पदा भरी पड़ी है। हमारे धर्माचार्य गोरक्षा की बात जब–तब उठाया भी करते हैं, किन्तु किसी का भी ध्यान इस ओर नहीं जाता कि वे स्वयं प्रयास करते हुए जनता को जाग्रत कर गोशक्ति–सम्पदा का सदुपयोग करते हुए लोगों को मुक्ति–मार्ग पर अग्रसर होने का उपदेश दें। प्रायः गोमाता की पूँछ पकड़कर वैतरणी पार करने का उपदेश सभी धर्माचार्य देते हैं, किन्तु इसके गूढ़ार्थ का विवेचन कर ज्ञान देने वाले धर्माचार्यों के दर्शन अब दुर्लभ हैं। अब से छः–सात दशक पूर्व तक दण्डी सन्यासी गोमाता की पूँछ पकड़कर वैतरणी पार करने का भावार्थ गोवंश के महत्व और महत्ता का उपदेश देते हुए बताते थे जिसे मैंने उनकी मंगलमयी मधुरवाणी में सुना भी है।

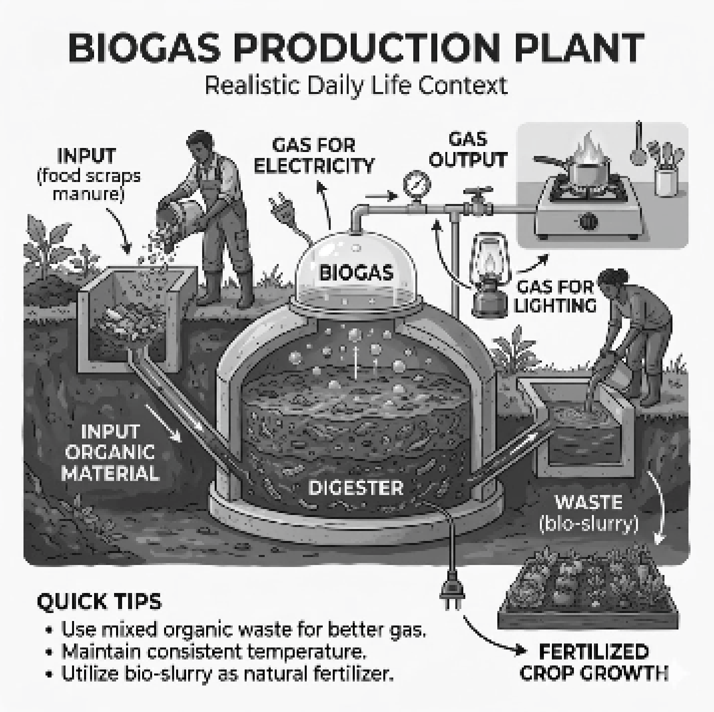

पहले पदात् भ्रमण करते हुए महान तपस्वी दण्डी सन्यासी ग्राम–ग्राम जाकर धरती की जैविक सृष्टि में गोवंश और मनुष्यों की रचना का वर्णन करते हुए गोपालन–पोषण–सेवा–पूजा मनुष्य का परम धर्म है जैसे उपदेश देते हुए इनकी रचना का ईश्वरीय हेतु भलीभाँति समझाते थे। उनके अनुसार ईश्वर ने मनुष्य को सर्वोत्कृष्ट रूप में इसलिये रचा है कि वह सृष्टि की निरन्तरता बनाये रखने वाली प्रकृति की सहायता करता हुआ गोवंश की शक्ति सम्पदा का समुचित उपयोग करके अपना जीवनयापन करता हुआ आवागमन के दुरूह चक्र से मुक्त हो सके। यह संसार वैतरणी नदी है। गोमाता इसे पारकर करने के लिए मुक्त होने का साधन है। जो व्यक्ति इसकी सेवा –पूजा व पालन–पोषण श्रद्धापूर्वक करता हुआ जीवनयापन करता है वह बिना किसी अन्य प्रयास के सहज ही आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है। हमारे पूर्वज आदिकाल से ही इन्हीं उपदेशों को हृदयंगम कर आचरण करते हुए अपना जीवन धन्य करते रहे हैं। यहाँ तक कि बड़े–बड़े सम्राटों ने गोमाता की रक्षा करने हेतु सिंह जैसे हिन्स पशु के सामने गोमाता के स्थान पर स्वयं को समर्पित कर दिया। ऐसे उदाहरणों से हमारे इतिहास के पृष्ठ भरे पड़े हैं।

लगभग पाँच–छः दशक पूर्व जब देश में ऐसी निरंकुश सरकार थी जिसके दल का चुनाव–चिह्न गाय और बछड़ा था और प्रधानमंत्री

श्रीमती इन्दिरा गाँधी थीं; तब हमारे देश के अनेक गोभक्तों ने गोवंश की हत्या रोकने के लिए शान्तिपूर्ण आन्दोलन–प्रदर्शन किया था। आन्दोलन का नेतृत्व आगे रहकर पुरी के शंकराचार्य निरंजन देव तीर्थ, प्रमुख सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, स्वामी करपात्री जी और जैनमुनि सुशील कुमार आदि अनेक संतों ने किया था। इन्दिरा सरकार ने बर्बरतापूर्वक लाठी–गोली चलाकर इस लोकमंगलकारी आन्दोलन का दमन किया था। संसद मार्ग गोभक्तों के रक्त से रंजित हो गया था, सैकड़ों आहत हुए और अनेक का बलिदान हुआ था। इसके पश्चात् देशभर में आक्रोश व्याप्त हुआ था, किन्तु इससे बड़ा आन्दोलन सरकार की कुटिलता के कारण नहीं हो सका। सरकार ने कृषकों को मशीनी हलों (ट्रैक्टरों) से कृषि करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कृषि–क्षेत्र से बैलों को बहिष्कृत करने का ऐसा अमंगलकारी कार्य किया जिसका कुफल आज भीषण संकट के रूप में हमारे सामने मुँह बाये खड़ा है। वर्तमान युद्ध ने इस पर पड़ा परदा हटा दिया है किन्तु हमारे शासकों की मदान्ध आँखों को यह दिखायी पड़ेगा, इसकी सम्भावना कम ही लगती है।

इन दिनों हमारे एक चर्चित तथाकथित शंकराचार्य गोमाता को राष्ट्रमाता की उपाधि से विभूषित करने के लिए सरकार पर दबाव बनाने हेतु यात्रा पर हैं, जबकि हमारी गोमाता आदिकाल से ही जगत्–माता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इसे जगत्–माता के आसन पर प्रतिष्ठित करने वाले हमारे पुण्यात्मा पूर्वज आदिकालीन ऋषि हैं। वही तपस्वी ऋषि जो दण्डी सन्यासी के रूप में पदात यात्रा करते हुए गाँव– गाँव जाकर गोवंश के महत्व और महत्ता का उपदेश देते थे। उल्लेखनीय है कि आदिशंकराचार्य जी ने इन्हीं दण्डी सन्यासियों में से सुपात्र को ही शंकराचार्य पद पर प्रतिष्ठित करने का नियम बनाया है। वर्तमान काल में दण्डी सन्यासियों के दर्शन तक दुर्लभ हैं। यदि वर्तमान ईरान–अमेरिका और इजराइल का युद्ध ऐसे ही चलता रहा तो इसके विश्व युद्ध में बदलने की प्रबल सम्भावना है। यदि ऐसा हुआ तो विनाशक आयुधों का प्रयोग होना निश्चित है। तब विश्व की अधिकांश जैविक सृष्टि समाप्त हो जायेगी और शेष में से अधिकांश घुट–घुटकर मरेगी। हमारा देश गुटनिरपेक्ष है किन्तु इस युद्ध का दुष्प्रभाव इस पर भी पड़ेगा। धरती पर पर्यावरण को भारी क्षति होने के कारण सम्पूर्ण धरती पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा। हमारे धर्माचार्यों को चाहिये कि वे अपने आश्रमों से निकलकर जनजागरण अभियान चलाते हुए, विश्व को शान्ति उपदेश देते हुए, **जगत्माता गो की शक्ति –सम्पदा का सदुपयोग** करने का उपदेश देने के लिए यात्रा करें। जगत्माता को राष्ट्रमाता की उपाधि की आकांक्षा नहीं है। इसे तो अपना प्रतिष्ठित स्थान चाहिये जो हमारा घर–प्रांगण ही है। यह हमारे स्नेह की आकांक्षी है और आशीर्वाद रूप में हमें अपनी शक्ति–सम्पदा द्वारा

सम्पन्न कर सुखी देखना चाहती है। यह जानती है कि इसकी व्यथा तभी दूर हो सकती है जब मनुष्य सुखी हो। ध्यान रहे कि भौतिक–विलास सुख नहीं है। परिश्रमहीनता सुख नहीं है। इन दोनों के कारण शरीर और मन दोनों रुग्ण होते हैं और रुग्ण मनुष्य सुखी हो ही नहीं सकता। गोमाता का अमृतमय दुग्ध शरीर के विकारों को नष्ट करके शरीर को स्वस्थ बनाये रखता है। इसके घृत का योगदान पर्यावरण शुद्ध बनाये रखने में सर्वाधिक है। हवनाग्नि में आहूत होकर इसकी शक्ति सहस्त्रों गुना बढ़ जाती है। गोमय और मूत्र औषधीय गुणों से युक्त होने के कारण रोगाणुओं और विषाणुओं को नष्ट करने में सक्षम हैं।

आज की वैश्विक दशा को देखकर हमारे धर्माचार्यों को चाहिये कि जनजागृति के लिये भ्रमण करते हुए राजनेताओं को भी जाग्रत करने का कार्य करें, जिससे भविष्य में खनिज तेल के अभाव का दुष्प्रभाव हमारी कृषि पर न पड़े। यदि हम सचेत होकर प्रयत्नशील नहीं हुए तो भविष्य में हमें भूखे मरने जैसी स्थिति का सामना करना पड़ेगा और अनगिनत लोग भूख से व्याकुल होकर तड़प–तड़प कर मरेंगे। सरकारी तन्त्र तब कुछ नहीं कर पायेगा, क्योंकि मशीनी कृषि आधारित सम्पूर्ण देशों की यही दशा होगी। कोई भी किसी की भी सहायता करने में समर्थ होगा ही नहीं। बड़े–बड़े धन कुबेर तक असमर्थ होकर रोटी की भीख मांगेंगे क्योंकि अन्न का स्थान धन नहीं ले पायेगा अर्थात् सोना–चाँदी निगलकर भी क्षुधा तृप्त नहीं होगी।

वर्तमान युद्ध हमारे लिये चेतावनी है। इससे सीख लेकर हम अपनी भूलों को सुधारकर गोवंश की सेवा पूजा करते हुए उसका आशीर्वाद पुनः प्राप्त कर सुख–शांतिमय जीवन जी सकते हैं। मेरे कहने का अर्थ यह नहीं कि हम मशीनों को पूर्ण रूपेण तिलांजलि दे दें। हम कम–से– कम मध्यम मार्ग तो अपना ही सकते हैं। इसके लिए हमें नरगोवत्सों को बैल बनाकर उन्हें हल जोतने का प्रशिक्षण देकर उनकी शक्ति का सदुपयोग यथाशीघ्र करने के साथ ही गोमय का उपयोग वैज्ञानिक ढंग से खाद बनाने के लिए करना चाहिये। गोबरगैस संयंत्र इस कार्य में **"एक पन्थ दो काज''** लोकोक्ति चरितार्थ करता हुआ हमारी ईंधन और खाद दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहायक सिद्ध हो चुका है, किन्तु हमने इसको उचित रूप में अपनाया ही नहीं है। अब भी समय है हम गोमाता की शक्ति–सम्पदा का सदुपयोग कर अपने देश को भावी ऊर्जा संकट से बचा सकते हैं। इसके लिये हमें गोवंश का आदर –सम्मान करते हुए इसे अपने परिवार का अंग मानकर यथाशीघ्र पुनर्प्रतिष्ठित करना होगा।

जगत्माता को राष्ट्रमाता की उपाधि की आकांक्षा नहीं है। उसे तो अपना प्रतिष्ठित स्थान चाहिये जो हमारा घर–आंगन ही है। यह हमारे स्नेह की आकांक्षी है और आशीर्वाद रूप में हमें अपनी शक्ति–सम्पदा द्वारा सम्पन्न कर सुखी देखना चाहती है। यह जानती है कि इसकी व्यथा तभी दूर हो सकती है जब मनुष्य सुखी हो।

पूजा पाराशर (कवयित्री, स्वतंत्र लेखिका)

प्रकृति की प्रतिकूलता का परिणाम ही प्रलय

यदा देवेषु वेदेषु गोषु विप्रेषु साधुषु।
धर्ममयि च विद्वेषः स वा आशु विनश्यति।।
(श्रीमद्भागवत, 7। 4 । 27)

अर्थात् कोई भी प्राणी जब देवता, वेद, गाय, ब्राह्मण, साधु, धर्म और मुझसे द्वेष करने लगता है, तब शीघ्र ही उसका विनाश हो जाता है। जिस प्रकार, मनुष्य अपनी सुख–सुविधाओं एवं प्रगति हेतु कुछ नियम या व्यवस्थाएँ बनाता है, ठीक उसी प्रकार, प्रकृति भी अपने अस्तित्व को सुरक्षित एवं सभी के लिए अनुकूल बनाए रखने हेतु किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं चाहती। जब यह हस्तक्षेप अति का रूप धारण करता है तो वह अपने विकराल रूप में प्रत्यक्ष हो, सचेत करने का प्रयास करती है। प्रकृति के इस रूप को देखकर, व्यक्ति कुछ देर के लिए जागृत तो होता है; ज्ञान चक्षु खुलते हैं, परंतु वह अपने स्वार्थ व आदतों के कारण उस विकराल स्वरूप को भुलाकर पुनः उसी रास्ते पर चलने लगता है।

प्रकृति ने विभिन्न प्रकार के फल, अनाज, वनस्पतियाँ, दूध, दही, घी आदि जैसे कितने ही स्वादिष्ट एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ दिए हैं, फिर भी मनुष्य किस स्वाद एवं स्वास्थ्य हेतु गोवंश–हत्या करते हैं? उदर खाद्य पदार्थ हेतु है, वह कोई शमशान नहीं, जहाँ एक शव से तृप्ति की जाती है। किस प्रकार उस मृत शरीर को इस मंदिर रूपी मानव शरीर हेतु खाद्य योग्य समझते हैं, जहाँ परमात्मा – आत्मा रूप में बास करता है।

आज, देश में एक ओर जहाँ भूमि को सोना उगलने योग्य बनाए जाने का प्रयास किया जा रहा है; देश में दूध की नदियाँ बहाने की बात की जा रही है; सोने की चिड़िया को फिर से डालों पर बैठने की व्यवस्था की जा रही है, वहीं दूसरी ओर स्वार्थपरता और क्रूरता हदें पार कर रही हैं। हाल ही में बहुत ही कष्टदायक व निंदनीय

घटनाएँ सामने आईं, जिसमें देश के कई स्थानों से गौ के सिर कटे मिले। उद्वेग पैदा करने वाले इस भयावह पूर्ण दृश्य से गोभक्तों व सेवकों में आक्रोश का वातावरण फैल गया। व्यक्ति की मानसिकता इतने नीचे स्तर पर गिर गई है कि उसे गौहत्या करने का अवसर प्राप्त नहीं हो रहा है तो वह इस प्रकार के कुकर्म–अक्षम्य अपराध पर उतारू हो गया है। प्रकृति ने विभिन्न प्रकार के फल, अनाज, वनस्पतियाँ, दूध, दही, घी आदि जैसे कितने ही स्वादिष्ट एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ दिए हैं, फिर भी मनुष्य किस स्वाद एवं स्वास्थ्य हेतु जीव–हत्या करते हैं? उदर खाद्य पदार्थ हेतु है, वह कोई शमशान नहीं जहाँ एक शव से तृप्ति की जाती है। किस प्रकार उस मृत शरीर को इस मंदिर रूपी मानव शरीर हेतु खाद्य योग्य समझते हैं, जहाँ परमात्मा – आत्मा रूप में बास करता है।

तमिल के महान संत कवि तिरुवल्लुवर ने कहा है – "जो लोग माया और मूढ़ता के फंदे से निकल गए हैं, वे लाश को नहीं खाते।" दिन–रात, सर्दी–गर्मी, बरसात–सूखा, पतझड़–हरियाली, जीवन–मृत्यु...सब कुछ प्रकृति जनित व्यवस्था है, इस ज्ञान से हम भलीभाँति परिचित हैं, परंतु सब कुछ जानते हुए भी व्यक्ति की लोलुपता, इस व्यवस्था में हस्तक्षेप करने से पीछे नहीं हटती। जहाँ प्राकृतिक रूप से नर–मादा प्राणियों का जन्म होता है, वहाँ केवल मादा प्राणियों के जन्म के लिए नई तकनीकी द्वारा कृत्रिम गर्भाधान की योजना बनाई गई है। इस कृत्रिम गर्भाधान द्वारा केवल बछिया या पड़िया अर्थात् दुग्ध देने वाले मादा प्राणी ही जन्म लेंगे। इस प्रकार, दुग्ध उत्पादन में भी वृद्धि होगी। यह कृत्रिम व्यवस्था एवं अप्राकृतिक परिवर्तन प्रगति नहीं, अपितु भविष्य में जन्मे एक नए अभिशाप को आमंत्रण देना है। यह बात कितनी मूर्खतापूर्ण लगती है कि मात्र मादा गोवंश का जन्म हो जिससे कि वे दुग्ध दें और अपने व्यवसाय में वृद्धि की जा सके। नर गोवंश को समाप्त ही कर दिया जाएगा? यह किस प्रकार की अप्राकृतिक विधियों की योजना बनाई जा रही है? चराचर को अव्यवस्थित करने का प्रयास कहाँ तक सफल हो पाएगा?

यह अत्यंत चिंताजनक एवं विचारणीय है कि आज किस प्रकार प्रत्येक अप्राकृतिक व्यवस्था को विज्ञान का रूप देकर **'विकास'** माना जा रहा है। **'विज्ञान'** प्राणी जगत के **कल्याण हेतु है** न कि **'विनाश'** हेतु। यह अवश्य ध्यान देने योग्य है कि प्रकृति के विपरीत जाने का परिणाम मात्र **'प्रलय'** है।

अपूज्य यत्र पूज्यन्ते पूज्यपूजाव्यतिक्रमः।
त्रीणि तत्र प्रजायन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्।।
(स्कंदपुराण, मा. के. 3 ।48)

'अर्थात् जहाँ अपूज्य का पूजन होता है एवं पूज्य का तिरस्कार होता है, वहाँ तीन बातें अवश्य होती हैं – **अकाल, मृत्यु और भय।**

फार्म 4 नियम 8

समाचार पत्र का नाम	**गोसम्पदा**
समाचार पत्र की पंजीकरण संख्या	69508/98
भाषा	हिन्दी/अंग्रेजी
प्रकाशन की अवधि	**मासिक**
समाचार पत्र का फुटकर मूल्य	20 रु. मात्र
प्रकाशक का नाम	**राजेन्द्र सिंहल**
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	संकटमोचन आश्रम, से.–6,रामकृष्णपुरम नई दिल्ली–110 022
मुद्रक का नाम	**रायल प्रेस**
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली
सम्पादक का नाम	**देवेन्द्र नायक**
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	संकटमोचन आश्रम, से.–6,रामकृष्णपुरम नई दिल्ली–110 022
मुद्रण स्थान	रायल प्रेस, बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली
प्रकाशन स्थान	संकटमोचन आश्रम, से.–6,रामकृष्णपुरम नई दिल्ली–110 022

मैं राजेन्द्र सिंहल, प्रकाशक, मुद्रक 'गोसम्पदा' घोषणा करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है।

राजेन्द्र सिंहल
प्रकाशक–गोसम्पदा

मुरारी शरण शुक्ल (सह संपादक, हिन्दू विश्व)

गाय देवत्व, ओज और इन्द्रत्व देने में सक्षम

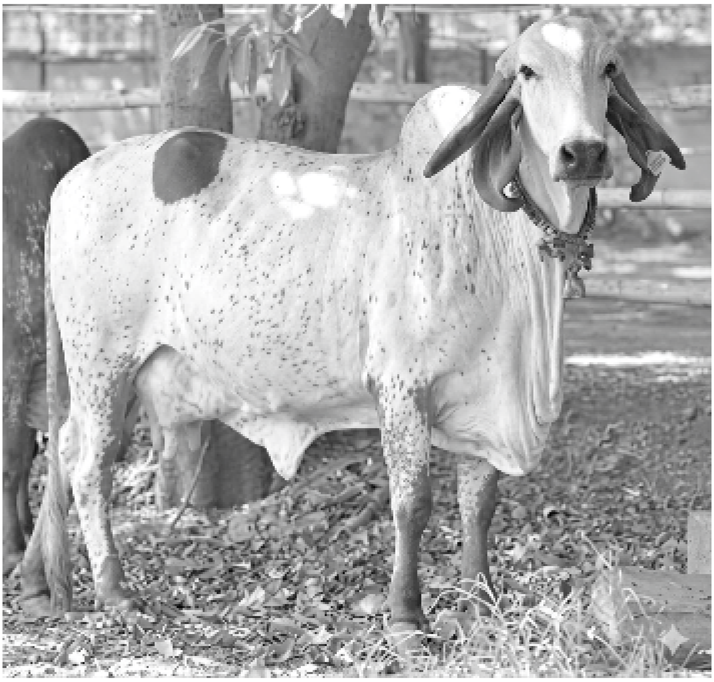

सामवेद अध्याय 6 / मंत्र 594 अन्न का यज्ञ किया जाता है। ये अन्न देवों के पहले भी उत्पन्न हुए– *देवेभ्यः पूर्वं अहं अमृतस्य ऋतस्य प्रथमजा अस्मि।* अर्थात देवों के पहले अमरत्व देने वाले यज्ञ के पूर्व में अन्न उत्पन्न हुआ। पहले अन्न उत्पन्न हुए और उसके बाद उसे खाने वाले उत्पन्न हुए। घास पहले पैदा हुई और घास खाने वाले गाय इत्यादि प्राणी बाद में उत्पन्न हुए। फल के वृक्ष पहले पैदा हुए और फल खाने वाले मनुष्य पीछे पैदा हुए।

दान का महत्व

अन्न उत्पन्न हुआ, दूध मिलने लगा और उससे यज्ञ होने शुरु हुए। तब दान का महत्व समझ में आया। उसके सम्बन्ध में वचन इस प्रकार है– *यः मां दीप्ति स आवत् अन्नं अदन्तं अहं अन्नं अद्मि* (सामवेद 594) अर्थात जो मुझ अन्न को दानरूप से दूसरों को देता है, उसका संरक्षण होता है, पर जो दान न देता हुआ अन्न को स्वयं ही खाता है उस कंजूस मनुष्य को मैं स्वयं (अन्न) ही खा जाता हूँ, अर्थात् पहले अन्न का दान करें फिर स्वयं अन्न खायें।

गायें घर में आएँ और रहें

ऋग्वेद के मंडल छः में सूक्त सँख्या 28 गौओं के बारे में है। ऋषि भारद्वाज बार्हस्पत्य कहते हैं कि गौएँ हमारे घर आएँ। घर आकर हमारा कल्याण करें। गायें हमारे गोष्ठ अर्थात् घर में निर्मित गौसदन में निवास करके हमें आनन्दित करें। गायों के मनुष्य के साथ घर में ही रहने का अभिप्राय इस सूक्त में व्यक्त किया गया है। यदि परिवार बड़ा हो, सरोकार बड़ा हो और गायों की सँख्या अधिक हो जाए, तो खेतों में गोष्ठ बनाकर उनको वहाँ रखने की व्यवस्था करने का अभिप्राय प्रकट हुआ है।

गोष्ठ के समानार्थक शब्द

गोष्ठ शब्द के दो अर्थ प्रचलित रहे हैं। भारत में प्रथम – गृह में निर्मित गोसदन और दूसरा – खेतों के मध्य ऊंची भूमि जहाँ गायों को टिकाया जाता है, उनके रहने के लिए स्थान बनाया जाता है, उस स्थान को अलग–अलग क्षेत्रीय भाषाओं में अलग–अलग नामों से जाना जाता है। गोशाला, गौशाला, गोष्ठ, बथान, गोआरी, गोठ, गोवा, गायवाड़ा, गोखाना, गोयल, गोहाल, गोहाली, गोष्ठान, गोढान, वाड़ो, व्रज, पशुवुलाशाली, आभीरपल्ली इत्यादि।

गायों में दूध और विभिन्न रंग–रूप

इन गायों के अनेक रंग और रूप वाली होने का वर्णन उपलब्ध है, उनके बछड़ों से युक्त होने का भी

विवरण उपलब्ध है। ऊषाकाल में गौएँ इन्द्रदेव के निमित्त दुग्ध प्रदान करती हैं। ऋग्वेद के इस वर्णन के साथ–साथ सामवेद में भी दूध वाली गायों का वर्णन उपलब्ध है। *कृष्णासु रोहिणीषु परुष्णीषु रूशत् पयः अधारयः* (सामवेद 595) अर्थात् काली, लाल और अनेक रंग की गायों में तेजस्वी दूध को तूने स्थापित किया। यह देवों की महान सामर्थ्य है। *सहऋषभाः संवत्सर द्वव्यूध्नीः विश्वास रूपाली बिभ्रतीः उदेत* (सामवेद 326)। अर्थात बैलों के साथ रहने वालीं, बछड़ों के साथ रहने वालीं, दोगुने बड़े थनों वालीं अनेक रंग की गायें हमारे पास आयें।

इन्द्र गाय और अन्न–धन प्राप्तकर्ता

ऋग्वेद 1/103/5 में कहा गया है कि इन्द्रदेव ने अपनी सामर्थ्य से गौओं, अश्वों, औषधियों, जलों और वनों को प्राप्त किया। ऋग्वेद में ही 6/28/2 में कहा गया है कि इन्द्रदेव याजकों और स्तोताओं के लिए अन्न–धन प्रदान करते हैं। उनके धन का कभी हरण नहीं करते, वरन उसे निरन्तर बढ़ाते हैं। देवत्व को प्राप्त करने की इच्छा रखने वालों को अखंडित एवं सुरक्षित निवास देते हैं।

गायें नष्ट नहीं होतीं

ऐसी गायें नष्ट नहीं होती हैं, तस्कर उन्हें हानि नहीं पहुँचा पाते, शत्रु के अस्त्र उन गायों को क्षति नहीं पहुँचा पाते। गौओं के पालक जिन गौओं से देवों का यजन करते हैं, उन्हीं गौओं के साथ चिरकाल तक सुखी रहें। इसके लिए गोपालक को भी गाय की ही भांति देवत्व को प्राप्त करना होता है, तब उन दोनों गोवंश और गोपालक के वंश को इन्द्र अखंडित और सुरक्षित निवास प्रदान करते हैं। ऐसे दिव्य देवत्व को प्राप्त गृहस्थ और उनकी गाय दोनों ही दिव्य सुरक्षा को प्राप्त हो जाते हैं।

दिव्य गौएँ निर्भय होती हैं

ऋषि भरद्वाज बार्हस्पत्य (ऋग्वेद 6/28/4) कहते हैं कि इस प्रकार की गौओं को द्रुतगामी अश्व जिन्हें रेणुका (धूल) उड़ाने वाले अश्व भी नहीं पा सकते, अपनी गति से पकड़ नहीं सकते। ऐसी गौओं को **अवध्य** कहते हुए कहा गया है कि इन गौओं को वध करने के लिए आघात न करें। देवत्व के मार्ग पर प्रवृत्त ऐसे यज्ञकर्ता की दिव्यत्तम गायें विस्तृत क्षेत्र में निर्भय होकर विचरण करती हैं।

गायें धनदायक होती हैं

ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर वर्णन है कि गायें धन देने वाली हैं, यहाँ 6/28/5 में तो कहा गया है कि गायें धन देने वाली हों। इन्द्रदेव से गायों की याचना की गई है। गाय धन–सम्पदा का माध्यम बने, यह मनोरथ प्रकट किया गया है।

गाय– इन्द्र और सोमरस के तुल्य

इसी मंत्र में गाय को सोमरस के समतुल्य पित्तशामक बताया गया है। गोदुग्ध की शीतकारक गुणवत्ता इसको पित्तशामक के रूप में विश्रुत करती है। यह शरीर की अतिरिक्त गर्मी और ऊर्जा असंतुलन को ठीक करता है। पित्तशामक होने से गोदुग्ध अद्भुत शक्तिवर्द्धक होता है। **अपनी शक्तिवर्द्धक क्षमता के कारण ही गोदुग्ध को इन्द्र के समान** कहा गया है। इन्द्र अर्थात् अप्रतिम शक्ति देने में सक्षम अमृत पदार्थ। *इमा या गावः स जनास।* शक्ति की अजस्र स्रोत होने के कारण ये गायें ही इन्द्र रूप कही गई हैं। गाय के दुग्ध के औषधीय प्रताप से हम मनुष्य शरीर में इन्द्र सदृश शक्ति और सौष्ठव प्राप्त करने में सक्षम थे, शक्ति व्युत्पन्न इन्द्रदेव तुल्य श्रद्धा हमारे योद्धा पाते रहे हैं। यह औषध क्षमता सोमरस के साथ–साथ केवल गोदुग्ध में ही पाई जाती है।

गाय निरोग और पवित्र करती है

ऋग्वेद 6/28/6 में स्पष्ट वर्णन आया है कि गाय हमें बलवान

बनाएँ। हे गाय माता आप हमारे रुग्ण एवं कृश शरीरों को सुन्दर एवं स्वस्थ बनाएँ। गोरस (गोदुग्ध, दधी छाछ, घृत, गोमूत्र, गोबर, गोबर का रस भी) शरीर को रोगमुक्त भी करता है एवं मानव शरीर को सुन्दर, सुडौल, हृष्ट–पुष्ट एवं सुदर्शन भी बनाता है। यह ऋषि भरद्वाज को प्राप्त वेद मंत्रों में स्पष्ट उद्घोष है।

गाय की ध्वनी और हवि दोनों पवित्रकारी हैं

उपरोक्त मन्त्र में कहा गया है कि – हे गोमाता आप अपनी कल्याणकारी ध्वनि से हमारे घरों को पवित्र करें। यहाँ स्पष्ट उल्लेख है कि गाय की ध्वनी घरों को पवित्र करती है, आसपास के क्षेत्र को पवित्र कर देती है, जहाँ तक गौ के रम्भाने की ध्वनी जाती है, वहाँ तक की वायु, वनस्पति, जल, बादल, बूंदें, भूमि, धूलकण, औषधि आदि सब कुछ पवित्र हो जाता है।

यज्ञ में गोमय से उपजी हवि ही पवित्र

मंत्र 6 में ही लिखा है कि यज्ञ मण्डप में वही अन्न हवि रूप में अर्पित होता है जो गोमय से सिंचित और पोषित भूमि से उपजा हो। उस अन्न का यशोगान होने की चर्चा की गई है। यश जो बन सके वह गुण ही अथर्ववेद में इतिहास नाम से सम्बोधित किया गया है– *यशसः कीर्तिसः।* गाय के दुग्ध का गुणगान मात्र नहीं किया है ऋग्वेद ने, यशोगान किया गया है। अर्थात् गाय का दूध, गोरस, गोवंश आधारित उत्पन्न अन्न में भारत का इतिहास सृजन कर सकने की शक्ति प्रकट करने की क्षमता का संकेत किया गया है।

गाय प्रजावती हों

मंत्र 7 में कहा गया है कि आप (गाय) बछड़ों से युक्त हों। यहाँ निहितार्थ पुरुष और स्त्री संतान दोनों युक्त होने का निहितार्थ है। इसीलिए पुल्लिंग शब्द का प्रयोग किया गया है। गायों के ये बछड़े उत्तम घास एवं स्वच्छ जल का पान करें। गायों का पालन करने से न केवल वातावरण पवित्र होता है, वरन वहाँ का घास और जल भी पवित्र हो जाता है, यह पुनः दुहराया गया है। यदि गाय इतनी पवित्रकारी क्षमता वाली है, तो उसका पालन करने वाले पालक को चोरी करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ऐसी गाय और पालक दोनों को हिंसक पशु कष्ट नहीं दे सकते, यह वेदों का उद्घोष है। परमेश्वर का कालरूप अस्त्र आपके पास ही न आए, यह संकल्प व्यक्त किया गया है।

गाय ओज की स्रोत है

मंत्र 8 में कहा गया है कि हे इन्द्रदेव आपके वीर्य (पराक्रम) में बलशाली का ओज संयुक्त हो। इन गौओं के उत्पादक, किरणों के प्रवाहों के साथ उत्प्रेरक एवं शक्तिवर्द्धक तत्व संयुक्त हों। इन्द्रदेव का पराक्रम उनकी शक्ति किरणों और गौओं के माध्यम से ही प्रकट होता है। इन्द्र और गौ इस सूक्त में समानार्थी भाव में प्रयुक्त हुए हैं। इस विषय से जुड़े अनेक पहलुओं को मैंने इस लेख में विभिन्न वैदिक विवरणों के माध्यम से प्रकट करने की चेष्टा की है।

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

ग्रीष्म ऋतु एवम् पंचगव्य

ग्रीष्म ऋतु का आगमन हो गया है। साल के बारह माह के इन दो माह में सबसे तेज धूप का समय है। अतः हमें अपने शरीर को धूप के इस तेज से बचाकर अपनी दिनचर्या अच्छे से चलानी है। इसलिए कुछ चीजें जो सिर से शरीर में गर्मी बढ़ाती हैं उन्हें इन दिनों में विशेषकर त्याग देने में ही भलाई है। उसी के साथ सिर से शरीर को ठंडक देने वाली चीजों का आहार में समावेश हमें **'लू'** लगने से बचाता है। साथ ही कुछ परिवर्तन **विहार** में करने से भी हमें अच्छा लाभ होता है।

हमारे कपडे हल्के रंग के हों जो सूरज की गर्मी को परावर्तित करेंगे। कपड़ा जितना गहरे रंग का होगा वो उतनी ही अधिक गर्मी को पकड़कर रखेगा। अतः गर्मी के दिनों में सफेद या हल्के रंग का कपड़ा ही शरीर के लिए आरामदायक होता है। सूती कपड़ा विशेषकर इन दिनों में पहनना भी गर्मी से बचने के लिए लाभदायक है। अन्य कोई भी सिंथेटिक कपड़ा हवा का आवागमन ठीक से नहीं होने देता, अतः शरीर के आसपास गर्मी बढ़कर हमें 'लू' लगने की संभावना बढ़ती है। हम धूप में घर से बाहर निकलते समय एक बोतल में पानी अपने पास अवश्य रख लें।

वर्तमान समय में हम जब भी बाहर जाएंगे तब हमारी गाड़ी रखने हेतु छाँव में ही जगह मिलेगी यह जरूरी नही है। उस समय अगर हम गरम सीट पर सीधा बैठते हैं तब बैठने की जगह से तुरंत ही शरीर में बहुत अधिक मात्रा में गर्मी पहुँचती है। इसका सीधा असर 'लू' लगने में सहायक होता है। उस समय हमारे पास अगर थोड़ा भी जल है तब सीट पर थोड़ा–सा डालकर उसकी ऊष्मा को कम करना बहुत ही लाभदायक होता है।

वाहन की सीट में कपड़े का कव्हर लगवाना भी 'लू' को बचाने में फायदेमंद होता है। कार चलाते समय अगर हम उसे ठंडा रखने के लिए AC लगाते हैं तब हमें जहाँ उतरना है वो जगह आने के कुछ समय पूर्व ही AC को बंद करें। ऐसा करने से धीरे–धीरे गाड़ी का तापमान थोड़ा बढ़ेगा जो बाहर की गर्मी के बीच का होगा। अतः गाड़ी से बाहर उतरने के पश्चात अचानक शरीर में तेज धूप नहीं लगेगी। उस समय बदलते हुए तापमान में शरीर अपने आप को अच्छे से ढाल लेता है। घर में लगे AC या कूलर से भी बाहर जाते–आते समय अचानक सीधे अंदर – बाहर न आएं न जाएं।

हमारे शरीर में अपना कार्य उचित तरीके से करने के लिए सततरूप से खून का बहाव चलता रहता है। मुंह के माध्यम से आवश्यक अन्न पहुँचाया जाता है, जो पदार्थ को खून में बदलता है। शेष बचा अन्न पसीना या मल – मूत्र के द्वारा शरीर से बाहर निकाला जाता हैं। खून को अपना काम ठीक से करने के लिए उसमें पानी का अंश निहित मात्रा में होना आवश्यक है। अगर पानी की मात्रा कम होती है तब खून में गाढ़ापन बढ़ता है। गाढ़ापन बढ़ने से खून ठीक से बहकर शरीर की प्रत्येक कोशिकाओं तक ठीक से नहीं पहुँच सकता। बारीक कोशिकाओं में वह जमने – रुकने लगता है। परिणामवश मस्तिष्क की बारीक कोशिकाओं में भी यही अवस्था आती है और मेंदू अपना निहित कार्य ठीक से नही कर पाता और मूर्च्छा आती है। संज्ञानाश होता है। अतः बार– बार जल सेवन करना अतिआवश्यक है। शरीर में एक अनुपात में जलीयांश होने से अंदर के अवयव अपना कार्य सुचारू रूप से कर सकते हैं। जब जलीयांश की कमी होती है तब शरीर के अंदर तापमान बढ़ने लगता है। बढ़ा हुआ तापमान पुनः शरीर के अंगों को कार्य

में बाधा पहुँचाता है। ''लू'' लगने के लक्षण मुँह का सूखना, गले में कांटे चुभने जैसा लगना, हथेलियों, तलवों व आँखों में जलन होना। तेज बुखार होना, सारे शरीर में टूटन एवम् दर्द होना, सिर में भारीपन या सिरदर्द होना, कमजोरी लगना, आँखों का अंदर धंस जाना, आँखों के नीचे कालापन आ जाना तबियत में बेचैनी व घबराहट होना, कभी – कभी पेट में मरोड़ हो कर बार – बार पतली दस्त भी होती है। बीमारी आने के बाद फिर उसका इलाज करने से तो अच्छा होगा कि बीमारी को आने से ही रोक लें।

पंचगव्य अर्थात गाय का दूध, उस दूध का बना दही, उसी दही से मक्खन प्राप्त कर बनाया हुआ घी, गोमूत्र एवम् गोबर। इनमें से दूध एवम् घी की तासीर ठंडी है। साथ ही दही को मथकर मक्खन प्राप्त होता है – यह ताजा मक्खन एवम् गोघृत का सेवन गर्मी के दिनों में बहुत लाभदायक होता है। हमेशा ताजा मक्खन ही सेवन करना है, बासा मक्खन खून में खराबी पैदा करता है। दही, छाछ (तक्र – ताक), गोमूत्र का सेवन ग्रीष्म ऋतु में नहीं करना चाहिए। छाछ एवम् गोमूत्र दोनों रुक्ष गुण के होने के कारण शरीर में रूखापन अधिक बढाते हैं। शरीर में रुक्षता/रूखापन बढ़ने से नसों में जकड़ाहट, नाक से खून आना, होंठ, पैर की एड़ी का फटना, त्वचा में रूखापन आना आदि लक्षण शरीर में उत्पन्न हो सकते हैं। इनसे बचने के लिए नाक में अंदर से गाय का घी लगाना, 2–2 चम्मच गाय का घी सुबह–शाम भोजन में सेवन करना, नाभी में रात्रि सोते समय 4 बूंद गाय का घी डालना, रात्रि सोते समय गाय के घी से पांव के तलुए में मालिश करने से शरीर में ठंडक पहुँचती है। अगर 'लू' लगने के लक्षण दिखाई दें तब सर्वप्रथम –

1. गीला सूती कपड़ा (पतला) शरीर पर ढककर हवा चलाएं। जिन्हें सिर से नहाना संभव हो वे सिर से नहाएं, ठंडे पानी से नहाएं। सिर से नीचे आने वाला पानी उस समय हमें गर्म महसूस होगा।
2. प्याज को सुंघाएँ/प्याज का रस निकालकर नाभी में डालें। सर्वांग में लगाएं, विशेषतः कपाल, कान के पीछे के हिस्सों में, हाथ एवम् पाँव के तलुओं में बार–बार लगाएं। 2–2 चम्मच प्याज का रस दिन में दो बार पिलाएं।
3. कच्चे आम की कैरी को पकाकर उसका रस निकालें। उसमें शक्कर एवम् नमक डालें और उसमें पानी मिलाकर दिन में 4– 5 बार पिलाएँ।
4. साधा पानी भी एक घंटे में दो–तीन बार पिलाएं।
5. खीरा, ककड़ी, तरबूज, खरबूज जैसे फल खाने में सेवन करें।
6. देसी स्वस्थ गाय के दूध से निर्मित लस्सी का सेवन मात्रावत करें।
7. धूप में निकलते समय जल, शरबत ग्रहण करके ही निकलें।
8. पके नारियल पानी का सेवन शरीर को जल के साथ आवश्यक खनिज भी देता है।
9. सूती–हल्के रंग के वस्त्र का परिधान शरीर को ठंडक देता है।
10. धूप में जाते समय सिर पर कटे प्याज को रुमाल में बांधकर रखने से भी मस्तिष्क को सुरक्षा मिलती है।
11. यह सब अनुभूत योगों का उपयोग अगर हम नियमित करते हैं तब धूप कितनी भी तेज हो हम अपने आप को निश्चित रूप से सुरक्षित रख सकते हैं।
12. रोज रात्रि में सोने के पूर्व घर के सभी लोगों को प्याज का रस सिर और पैर के तलुओं में लगाना एवं सूंघना निश्चित करें। इससे 'लू' लगने के पूर्व ही शरीर सुरक्षित हो जाता है।
13. गर्मी के दो माह में छाछ का सेवन नहीं करना चाहिये ऐसा शास्त्र वचन है।

डॉ. विजय लक्ष्मी (अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड)

गाय की सुरक्षा हर नागरिक का परम कर्तव्य

गाय देश की संस्कृति है। इसकी सुरक्षा हर नागरिक की जिम्मेदारी है। एक समय वह भी था जब भारतीय किसान कृषि के क्षेत्र में पूरे विश्व में सर्वोपरि था, जिसका कारण केवल गाय थी। शास्त्र और विद्वानों के अनुसार कुछ पशु–पक्षी ऐसे हैं जो आत्मा की विकास यात्रा के अंतिम पड़ाव पर होते हैं उनमें से गाय भी एक है, इसके बाद उस आत्मा को मनुष्य योनि में आना ही होता है। वर्तमान में गोमाता की स्थिति अत्यंत खराब होती जा रही है। सनातन हिंदू धर्म की बात करें तो गाय को गोमाता मानकर पूजा जाता है और सुबह रोटी खिलाना शुभ माना जाता है, लेकिन व्यावसायिक स्वार्थ के वशीभूत अनुत्पादक या बुजुर्ग गायों को बेसहारा उन्हें भटकने के लिए छोड़ दिया जाता है, जिससे वे कचरा खाने को विवश हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में मशीनीकरण के कारण उनकी दयनीय स्थिति, उपेक्षा और बेसहारा घूमने की समस्या प्रमुख हैं। दूध न देने वाली गायों को छोड़ना, गोचर भूमि की कमी और वृद्ध गायों की देखभाल का अभाव बड़ी चुनौतियां हैं। यह बात प्राचीन काल से ही मानी जाती रही है कि गाय हमारे सभी आर्थिक कार्यों को प्रभावित करती है। गायों को आज के समय में न केवल आर्थिक दृष्टि से बल्कि करुणा और संरक्षण के दृष्टिकोण से भी गंभीर देखभाल की आवश्यकता है। दुधारू गायों को महत्व मिलता है, लेकिन दूध न देने पर उन्हें सड़क पर भटकने के लिए छोड़ दिया जाता है जो कि एक अत्यंत गंभीर प्रश्न है। अनुमान है कि गाय अपने दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोबर और बैल के माध्यम से भारत की संपत्ति में प्रतिवर्ष लगभग 1000 करोड़ रुपए से अधिक का योगदान देती है जो कृषि को छोड़कर देश का कोई भी अन्य उद्योग नहीं कर सकता। आधुनिक विज्ञान भी गोमाता के गुणों को स्वीकार करता है। देसी गाय केवल एक जानवर नहीं है, अपितु प्रकृति की अद्भुत देन है। यदि हम विचार करें तो इसके दूध से लेकर गाय के गोबर–गोमूत्र तक में ऐसे गुण मिले हैं जो हमें अनेक रोगों से लड़ने में मदद करते हैं। वर्तमान की बात करें तो गोमाता के लुप्त होने के अनेक

कारणों में से एक कारण यह भी है कि हिंदू धर्म के लोगों द्वारा अपनी संस्कृति और गोमाता के महत्व को भुला देना तथा अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से गोपालन छोड़कर भैंस पालन आदि कारण भी हैं। इस प्रकार भारत में देसी गाय का संरक्षण एक अत्यंत चिंता का विषय बन गया है।

रास्तों पर बेसहारा घूम रही गायों की देखरेख एवं संरक्षण के लिए जगह–जगह गौशालाओं का निर्माण भी करना चाहिए। भारत में गाय की स्थिति अत्यंत दयनीय है। गायों की संख्या बढ़ाये बिना, इसमें सुधार किए बिना भारतीय अर्थव्यवस्था में स्थाई विकास करना संभव नहीं है। विदेशी नस्ल की गाय को भारतीय संस्कृति की दृष्टि से गोमाता नहीं कहा जा सकता। मनुष्यों की तरह गायों को भी सामाजिक रहना पसंद होता है और हमेशा समूह में रहती हैं जिससे उनके बीच एक मजबूत बंधन विकसित होता है। सुख–समृद्धि की प्रतीक रही भारतीय गायें आज गौशालाओं में भी उपेक्षित हैं। वर्तमान में अधिक दूध के लिए विदेशी गायों को पाला जा रहा है, जबकि भारतीय नस्ल की गायें आज भी सर्वाधिक दूध देती हैं। गौशाला में देशी गोवंश के संरक्षण एवं संवर्धन की परंपरा भी खत्म हो रही है। भारतीय ऋषि–मुनियों ने गाय को कामधेनु माना है, जो समस्त भौतिक इच्छाओं की पूर्ति करने वाली है। हम भारतीय गोवंश को अपनाकर उन्हें गोशाला में संरक्षित, संवर्द्धित कर सकते हैं, जिसका सर्वाधिक लाभ भी हमें ही मिलेगा।

देशी गोवंश को हमारी गौशालाओं से हटाने की साजिश भी सफल हो रही है, जिस पर समय

रहते ध्यान देना जरूरी है। देश में गायों की तेजी से घट रही संख्या भी चिंता का विषय है। राष्ट्रीय स्तर पर प्राणियों की संख्या में जहां गायों की संख्या तेजी से घट रही है, वहीं उसके मुकाबले भैंस की संख्या में उससे कहीं तेज गति से वृद्धि दर्ज की जा रही है। एक रिपोर्ट के अनुसार दूध देने के बाद सूख चुकी गायों को पालना बहुत महंगा साबित होने के कारण किसान गाय पालने से पीछे हट रहे हैं, जिसके कारण आने वाले समय में गाय विलुप्तप्राय हो सकती है। वास्तविकता यह है कि गाय और बैल अधिकांशतः अपना जीवन स्वाभाविक रूप से नहीं जी पाते क्योंकि आर्थिक दृष्टि से लाभ प्राप्त करने के लिए करोड़ों की संख्या में उनका पालन–पोषण किया जाता है। इसके अलावा यदि अभ्यारणों में रहने वाली गायों –गोवंश की भली–भांति देखभाल की जाए तो वह वास्तव में बहुत अधिक उम्र तक जीवित रह सकते हैं। गायों के साथ सकारात्मक मानवीय संपर्क से मानव–गोवंश का संबंध अत्यधिक बेहतर होता है। गर्दन पर हल्के से हाथ फेरने या सहलाने के सकारात्मक प्रभाव से गायों का मनुष्यों के प्रति भय कम होता है, चाहे उनका स्वभाव कैसा भी हो।

हिंदू धर्म में गाय का महत्व इसलिए रहा क्योंकि प्राचीन काल में भारत एक कृषि प्रधान देश था और आज भी है, साथ ही गाय को अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी माना जाता था। भारत जैसे और भी देश हैं जो कृषि प्रधान रहे हैं परंतु वहां गायों को इतना महत्व नहीं मिला, जितना भारत में। भगवान श्रीकृष्ण ने गाय के महत्व को बढ़ाने के लिए गौपूजा और गौशालाओं के निर्माण की नए सिरे से नींव रखी थी। भगवान बालकृष्ण ने गाय–गोवंश चराने का कार्य गोपाष्टमी से प्रारंभ किया था। वैज्ञानिक शोधानुसार पता चला है कि गाय में जितनी सकारात्मक ऊर्जा होती है उतनी किसी अन्य प्राणी में नहीं। गाय के ऊपर रीड की हड्डी में स्थित सूर्य केतु नाड़ी दूध–गोमूत्र में स्वर्ण तत्व निर्माण करती है। वैज्ञानिक कहते हैं कि गाय ही एक मात्र ऐसा प्राणी है जो ऑक्सीजन ग्रहण करती है और ऑक्सीजन ही छोड़ती है, (इस विषय में शोध भी जारी है) जबकि मनुष्य सहित सभी प्राणी ऑक्सीजन लेते और कार्बनडाई ऑक्साइड छोड़ते हैं। पेड़–पौधे इसका ठीक उल्टा करते हैं। वर्तमान में मनुष्य ही अपने स्वार्थ के वशीभूत इन बेसहारा गोवंश को इस भयावह स्थिति तक पहुंचाने का जिम्मेदार है। वर्तमान में गायों के बारे में एक महत्वपूर्ण तथ्य यही है कि गाय–गोवंश बुद्धिमान, दयालु और संवेदनशील प्राणी हैं जो हमसे अधिक बेहतर व्यवहार की हकदार हैं। इस बात में कोई संदेह नहीं कि आधुनिकता की होड़ में हम अपनी गोमाता से ही दूर होते जा रहे हैं।

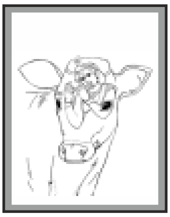

बीफ पर फैलाया जा रहा भ्रम गाय पर एक खरोंच भी बर्दाश्त नहीं : योगी

जागरण संवाददाता आगरा : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद और उनके उत्तर प्रदेश से सर्वाधिक बीफ निर्यात के आरोपों पर तीखा जवाब दिया। उन्होंने कहा कि उनकी क्या परवाह करनी वह तो हिंदुओं के हर विषय का विरोध करते हैं। मौलानाओं को साथ लेकर चलते हैं। वे बोले बीफ पर भी भ्रम फैलाया जा रहा है। उन्होंने संघ पदाधिकारियों और भाजपा की संयुक्त बैठक में ही प्रश्न किया – आप बताओ क्या हमारी सरकार गाय पर एक खरोंच भी बर्दाश्त कर सकती है, फिर बोले नहीं।

पीलीभीत में सिखों के मतांतरण को लेकर बोले कि अब इस पर रोक के साथ घर वापसी का

दौर चल रहा है। मुख्यमंत्री भाजपा और संघ की समन्वय बैठक में शामिल होने के लिए गतमाह अमर कन्वेंशन सेंटर पहुंचे। बैठक में प्रारंभिक रूप से 15 विषय उठाए गए। इसमें एक अविमुक्तेश्वरानंद के बीफ निर्यात के बयान से जुड़ा था। योगी ने कहा कि उनके विरुद्ध जो रिपोर्ट हुई वह सरकार ने नहीं कराई। कुछ लोग कोर्ट में गए वहां से हुए आदेश पर एफआइआर दर्ज हुई। सीएम ने कहा प्रदेश में गाय का नाखून भी नहीं तोड़ने दिया जाएगा। गोशालाओं के लिए बजट में दो हजार करोड़ का प्रविधान रखा है।

काशी में नाव पर इफ्तार कर खाया मांसाहार और गंगा में ही फेंके अवशेष

वाराणसी (जागरण संवाददाता)। गतमाह गंगा नदी में नौका विहार करते हुए रोजा इफ्तार पार्टी की गई। इस दौरान मांसाहारी भोजन खाकर अवशेष नदी में ही फेंक दिए गए। इस मामले में 14 युवकों को गिरफ्तार किया गया है। आरोपितों को मजिस्ट्रेट के सामने पेश करके न्यायिक हिरासत में एक दिन के लिए जेल भेज दिया गया है। यह कार्रवाई इंटरनेट मीडिया पर घटना का वीडियो प्रसारित होने के बाद की गई। भारतीय जनता युवा मोर्चा के महानगर अध्यक्ष रजत जायसवाल की रिपोर्ट पर कोतवाली में मुकदमा दर्ज किया गया है। अंजुमन इंतेजामिया मसाजिद ने

गंगा में नाव पर बैठकर रोजा इफ्तार करने की निंदा की है। अंजुमन इंतेजामिया के संयुक्त सचिव एसएम यासीन ने कहा कि इफ्तार कोई सैर या पिकनिक नहीं एक धार्मिक कार्य है। इफ्तार के तुरंत बाद मगरिब की नमाज जरूरी है। युवकों के कृत्य की जितनी निंदा की जाए कम है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि मां गंगा सनातन धर्म के अनुयायियों की आस्था का प्रमुख केंद्र हैं। मां गंगा के जल का आचमन करने के लिए प्रतिदिन लाखों की संख्या में श्रद्धालु काशी आते हैं। ऐसे में मुस्लिम समुदाय के युवकों द्वारा मां गंगा की पावन धारा में नाव पर बैठकर इफ्तार के समय बिरयानी खाना और उसके अवशेष जल में फेंकना निंदनीय कृत्य है। रजत ने पुलिस को रिपोर्ट के साथ वीडियो भी उपलब्ध कराया। इसमें नजर आ रहा है कि युवक नाव पर सवार होकर गंगा में इफ्तारी के दौरान कई तरह की वस्तुओं का सेवन कर रहे हैं। पुलिस के साथ आरोपितों की झड़प भी हुई।

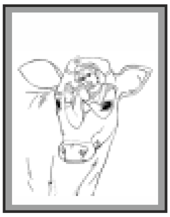

गोरक्षा व गोआश्रय आत्मनिर्भरता में योगदान देने वाली विभूतियां होंगी सम्मानित : मुख्यमंत्री

झाँसी / लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरक्षा एवं गो–आश्रय स्थलों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में उत्कृष्ट कार्य करने वाली विभूतियों को सम्मानित करने का निर्णय लिया है। गत माह गोसेवा आयोग की बैठक में मुख्यमंत्री ने निराश्रित गो आश्रय स्थलों की व्यवस्थाओं की विस्तृत समीक्षा करते हुए **प्रत्येक गौशाला में भूसा बैंक** की स्थापना पर विशेष जोर दिया। उन्होंने स्थानीय किसानों के साथ समन्वय स्थापित कर हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा प्राकृतिक खेती से जुड़े किसानों को गो–आश्रय स्थलों से जोड़ने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री जी ने सभी गो–आश्रय स्थलों में सीसीटीवी कैमरों की स्थापना एवं सतत मॉनिटरिंग सुनिश्चित करने के निर्देश दिए और इसके लिए सीएसआर फंड के प्रभावी उपयोग की संभावनाओं पर बल दिया। उन्होंने कहा कि पारदर्शिता और तकनीक आधारित निगरानी से व्यवस्थाएं और सुदृढ़ होंगीं। मुख्यमंत्री ने गोसेवा आयोग के पदाधिकारियों एवं पशुधन विभाग के अधिकारियों को नियमित रूप से गो–आश्रय स्थलों का निरीक्षण करने के निर्देश दिए। आयोग के पदाधिकारियों को 2–2 के समूह में मंडलवार भ्रमण कर भूसा बैंक की स्थापना और गोचर भूमि के विस्तार कार्य को गति देने को कहा गया है। प्रत्येक भ्रमण की रिपोर्ट मुख्यमंत्री कार्यालय को उपलब्ध कराई जाएगी। आयोग के भ्रमण में वरिष्ठ विभागीय अधिकारी भी होंगे साथ ही विभागीय मंत्री के नेतृत्व में राज्यव्यापी निरीक्षण और मुख्यालय स्तर से निदेशक द्वारा मासिक औचक निरीक्षण भी सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि गो संरक्षण केवल आस्था का विषय नहीं बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था, प्राकृतिक खेती और सतत विकास का मजबूत आधार है। इस दृष्टि से गो आश्रय स्थलों के संचालन में पारदर्शिताएं तकनीक और

जनसहभागिता को प्राथमिकता दी जाए। डीबीटी प्रणाली के माध्यम से समयबद्ध भुगतान सुनिश्चित करने और प्रत्येक गो–आश्रय स्थल पर गोवंश की दैनिक संख्या का अनिवार्य रजिस्टर संचालित करने के निर्देश भी दिए गए। बैठक में अवगत कराया गया कि प्रदेश में वर्तमान में 7.527 गो–आश्रय स्थलों में 12.39 लाख से अधिक गोवंश संरक्षित हैं। इनमें 6.433 अस्थायी स्थलों में 9.89 लाख 518 वृहद गो संरक्षण केंद्रों में 1.58 लाख 323 कान्हा गो आश्रयों में 77.925 तथा 253 कांजी हाउस में 13.576 गोवंश संरक्षित हैं। मुख्यमंत्री सहभागिता योजना के तहत 1.14 लाख लाभार्थियों को 1.83 लाख गोवंश सुपुर्द किए गए हैं, जिनके सत्यापन एवं समुचित भरण–पोषण के निर्देश दिए गए हैं। भूसा एवं साइलेज की उपलब्धता के संबंध में बताया गया कि वित्तीय वर्ष 2026–27 के लिए टेंडर प्रक्रिया समयबद्ध रूप से पूरी की जा रही है। निगरानी व्यवस्था के तहत 74 जनपदों में 5.446 गोआश्रय स्थलों पर 7.592 सीसीटीवी कैमरे स्थापित किए जा

चुके हैं। 52 जनपदों में कमांड एंड कंट्रोल रूम स्थापित हैं, जबकि शेष में प्रक्रिया प्रगति पर है। गोचर भूमि के प्रभावी उपयोग के लिए 61.118 हेक्टेयर से अधिक भूमि उपलब्ध है, जिसमें से 10. 641.99 हेक्टेयर को गो–आश्रय स्थलों से जोड़ा गया है तथा 7. 364.03 हेक्टेयर में हरे चारे का विकास किया जा चुका है। बैठक में बताया गया कि प्रदेश में 97 गोबर गैस संयंत्र संचालित हैं, जो स्वच्छ ऊर्जा एवं आय सृजन का प्रभावी माध्यम बन रहे हैं। मुख्यमंत्री ने इनके विस्तार पर जोर दिया। साथ ही विभिन्न जनपदों में स्वयं सहायता समूहों एवं एनजीओ द्वारा गो–पेंट, वर्मी कम्पोस्ट, गो–दीप सहित अन्य उत्पादों के निर्माण को आत्मनिर्भर बनाना है।

गोरक्षकों ने डेढ़ दर्जन से अधिक गोवंश को कराया मुक्त

नादौती / पत्रिका। थाना क्षेत्र के खूड़ा चैनपुर गुड़ली गांव के जंगल में गत माह गोवंश को ट्रक में चढ़ा रहे गोतस्कर गोसेवकों को देख वाहन को छोड़कर भाग गए। गो सेवकों द्वारा पुलिस को दी गई सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने वाहन को जब्त कर लिया। वहीं गोसेवकों की रिपोर्ट पर अगले दिन प्रकरण दर्ज किया गया है। जानकारी के अनुसार जिला गोरक्षा प्रमुख हरेन्द्र कोली व विहिप बजरंगल दल के अशोक जैमन उस रात सरसों निकलवाने के लिए थ्रेसर की तलाश में गुड़ली गांव गए थे। इस दौरान उन्हें जंगल में खड़े ट्रक में गोवंश को भरते हुए कुछ लोग दिखाई दिए। उन्होंने नजदीक जाकर ट्रक को देखा तो इससे पहले ही गोवंश को ट्रक में चढ़ाने वाले लोग अंधेरे का फायदा उठाते हुए भाग गए। गोरक्षा प्रमुख कोली व विहिप के जैमन ने बताया कि ट्रक में करीब 16 गोवंश चढ़ाया हुआ मिला। वहीं पांच गोवंश के ट्रक में चढ़ाने के लिए पैर बांध कर पटक रखा था। उन्होंने ट्रक से गोवंश को बाहर निकालकर व नीचे बंधे गोवंश को बंधन मुक्त कर जंगल में छोड़ दिया। उन्होंने बताया कि पुलिस रात को ही हरियाणा नम्बर के ट्रक को जब्त कर थाने पर ले आई। वहीं अगले दिन उनके द्वारा अज्ञात लोगों के विरुद्ध गोतस्करी का मामला दर्ज कराया है।

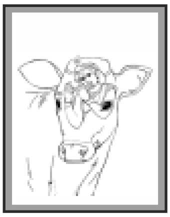

महान गोरक्षक फरसा वाले बाबा की सुनियोजित हत्या?

मथुरा। मूल रूप से फिरोजाबाद के नगला भूपाल (सिरसागंज) के रहने वाले चंद्रशेखर बाबा ने 19 साल की उम्र में ही सांसारिक जीवन त्याग दिया था। अयोध्या में कार सेवा में भाग लिया और इसके बाद संन्यास लेकर अपना जीवन गोरक्षा को समर्पित कर दिया। उनके पैतृक गांव में उनके बड़े भाई और उनका पूरा परिवार है। बाबा के माता–पिता का उनके बचपन में ही देहांत हो गया था।

बाबा के बड़े भाई केशव बताते हैं कि बाबा अपने पैतृक गांव में केवल धार्मिक कार्यों में ही जाते थे। बरसाना, नंदगांव कोसीकलां और आसपास के इलाकों में बाबा की अलग ही पहचान थी। वह अपने साथ हमेशा फरसा रखते थे, जो उनके लिए सिर्फ एक हथियार नहीं, बल्कि गोरक्षा का प्रतीक बन गया था।

बाबा ने गोरक्षकों की एक टीम बना रखी थी, जो रात–दिन सक्रिय रहती थी। गो तस्करी की सूचना मिलते ही बाबा खुद मौके पर पहुंचते थे। समर्थकों के अनुसार, उन्होंने अनेक बार तस्करी के प्रयासों को नाकाम किया और सैकड़ों गोवंश का जीवन बचाया। उनकी दिनचर्या भी असाधारण थी। हर रात को वह सड़कों पर निकलकर निराश्रित गायों की हालत देखते थे। उन्हें खाने–पीने की चिंता नहीं थी, एक आलू में पूरा दिन काट देते थे। उनकी गौशाला में बचाई हुई करीब 400 गायों की देखभाल होती है, जो उनके जीवन का सबसे बड़ा केंद्र थी।

बाबा पर कई बार हमले भी हुए, लेकिन वह पीछे नहीं हटे। वर्ष 2012 और 2015 में हुए जानलेवा हमलों में वह बाल–बाल बच गए, लेकिन गोरक्षा के अपने मिशन से कभी डिगे नहीं। अब उनकी सुनियोजित हत्या के बाद समर्थकों में गहरा शोक है। लोग उन्हें केवल एक बाबा नहीं, बल्कि गो सेवा के लिए समर्पित योद्धा के रूप में याद कर रहे हैं।

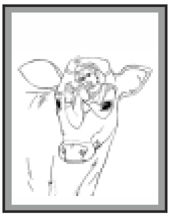

गोवंश संरक्षण कानून के लिए साधु-संतों ने उठाई आवाज

नई दिल्ली (दैनिक जागरण) : मंगोलपुरी में गत माह हुई बैठक में देश के विभिन्न राज्यों से आए साधु–संतों ने संपूर्ण देश में गोवंश संरक्षण के लिए कानून बनाने की मांग की। बैठक में गोसेवा अभियान की कार्ययोजना पर भी मंथन किया गया। बैठक में संतों, गोभक्तों और गोसेवकों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि अभियान किसी संस्था, संगठन या राजनीतिक दल के बैनर तले नहीं, बल्कि गोमाता और नंदी बाबा के सान्निध्य में संचालित होगा। साधु–संतों का कहना था कि वे चाहते हैं कि **गोवंश संरक्षण के लिए केंद्रीय कानून बनाया जाए, गोमाता को राष्ट्रमाता का दर्जा दिया जाए और देश में गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध हो।**

बैठक में उपस्थित संतों ने कहा कि गोवंश तस्करी में लिप्त अपराधियों को आजीवन कारावास की सजा का प्राविधान होना चाहिए। गोवंश तस्करी में जब्त वाहनों को गोशालाओं के उपयोग में लाया जाए। उन्होंने गोबर और गोमूत्र पर आधारित अनुसंधान विश्वविद्यालय स्थापित करने, गोशालाओं को **वीबी जी राम जी योजना** से जोड़ने, गोशाला को बिजली बिल में छूट और बेसहारा गोवंश की सेवा के लिए सरकार की तरफ से चारे की व्यवस्था करने की मांग की गई।

आगामी 27 अप्रैल को भारत की सभी तहसील, तालुका मुख्यालयों, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल और मुख्यमंत्री के नाम

प्रार्थना पत्र सौंपे जाएंगे। संतों ने चेतावनी दी कि अपेक्षित उत्तर न मिला तो जुलाई और अक्टूबर में फिर से यह प्रक्रिया दोहराई जाएगी। साधु–संतों ने कहा कि देश में इस समय हर नागरिक गोमाता की रक्षा के लिए अधिक जागरूक हुआ है। बैठक में मलूक पीठ से गोपेश कृष्णदास, हरिद्वार की कृष्णायन गौशाला से पूज्य अच्युतानंद महाराज, श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के संरक्षक संत रविंद्रानंद सरस्वती, भजन सम्राट प्रकाश महाराज, प्रकाश नारायण महाराज, हनुमान गढ़ी अयोध्या से चंद्रमादास महाराज, मलूक पीठ वृंदावन से रामतीर्थ महाराज, विश्व हिंदू परिषद के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जगन्नाथ शाही जी, परमानंद द्विवेदी जी, श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के अध्यक्ष डाक्टर वीरेंद्र गर्ग जी, राष्ट्रीय स्वाभिमान आंदोलन से सुरेंद्र बिष्ट जी आदि मौजूद रहे।

अगले वर्ष 27 फरवरी को दिल्ली आएंगे देशभर के साधु–संत अगले साल 27 फरवरी को देश के 800 जिलों और 5000 तहसीलों से साधु–संत और गोभक्त देश की राजधानी दिल्ली में एकत्र होंगे। यहां वे केंद्र सरकार से शांतिपूर्ण संकीर्तन के माध्यम से गो सेवा, गो संरक्षण और गो–सम्मान के लिए कदम उठाने का आग्रह करेंगे। यह संकीर्तन 15 अगस्त 2027 तक यानी छह माह चलेगा। इसके बाद भी सरकार की ओर से कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला तो फिर देश के संत गंगाजल पीकर उपवास करेंगे। फिर भी यदि केंद्र सरकार ने कुछ नहीं किया तो गोमाता हितार्थ आमरण अनशन शुरू किया जाएगा।

Dr. Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

THE ANCESTRAL ANCHOR
THE SOCIAL AND PSYCHOLOGICAL RESONANCE OF INDIGENOUS COW CONSERVATION

In the hyper-accelerated landscape of 2026, where digital exhaustion and urban isolation have become the global norm, the conservation of indigenous cows has emerged as a profound psychological and social movement. Unlike the industrial Holstein or Jersey breeds- genetically optimized for volume and treated as biological machines, indigenous cattle like the Gir, Sahiwal are "sentinel" animals. To conserve them is not merely an act of agriculture; it is an act of psychological grounding and social reclamation. In a world that feels increasingly homeless, the indigenous cow represents an unbreakable link to ancestral memory, offering a unique form of emotional stability that modern therapy is only beginning to decode.

The Psychological Sanctuary: Co-Regulation and Biological Homeostasis

The psychological impact of interacting with an indigenous cow is rooted in the concept of biophilia- our innate human need to connect with other life forms but with a native twist. Indigenous breeds possess a temperament that is markedly different from high-intensity dairy hybrids. They are known for their calm, stoic and highly perceptive nature. Psychologically, this creates a "mirroring" effect for the human caretaker. When a person enters the space of a native cow, they are entering a zone of co-regulation. Because the cow's resting heart rate is slower and its breathing more rhythmic, the human nervous system naturally begins to slow down to match it.

This interaction triggers a significant neurological shift. Physical contact with the warm, textured coat of a native breed often described in traditional texts as a "Sattvic" or calming energy, releases high levels of oxytocin while suppressing cortisol. For the modern individual suffering from "decision fatigue" or chronic anxiety, the presence of the indigenous cow offers a non-judgmental sanctuary. The cow does not demand a digital response or a professional performance; it simply exists in a state of "presentness”. This "living meditation" provides a sense of biological safety that is increasingly rare in urban environments. For displaced rural populations, the presence of these familiar animals acts as a psychological anchor, mitigating the "identity thinness" that comes with migration and modernization.

The Social Fabric: Sovereignty, Dignity and the "Village Commons"

On a social level, the indigenous cow is the ultimate "Social Glue”. In traditional societies, the cow was never an isolated commodity; it was the center of a circular community ecosystem. Conserving these breeds today is a radical act of Social Sovereignty. When a village protects its native cattle, it is reclaiming its right to define what is valuable, moving away from a "one-size-fits-all" global economy that often labels local traditions as obsolete. This creates a profound sense of Community Dignity. A farmer who maintains a pure indigenous lineage isn't just a producer; they are a custodian of a living heritage. This shift from "worker" to "guardian" has immense social implications for self-worth and local leadership.

Furthermore, indigenous cow conservation revitalizes the "Social Commons”. The revival of traditional grazing lands (Gochar) creates physical spaces where different generations meet. It is here, in the shadow of the herd, that oral histories are passed down and local disputes are settled. This intergenerational transfer of knowledge is vital for social health, preventing the isolation of the elderly and providing the youth with a sense of purpose rooted in their own soil. In the context of "Energy Justice," the indigenous cow also serves as a social equalizer. By providing fuel (biogas) and fertilizer (organic manure) at zero cost, the cow empowers the most marginalized members of society, giving them the economic freedom to stay in their communities rather than being forced into the "urban grind”.

Ultimately, the conservation of indigenous cows is a fight for the Human Spirit. It is a refusal to let the "Soul of the Soil" be paved over by industrial indifference. By protecting these animals, we are protecting our own capacity for empathy, our connection to our ancestors and our right to a slower but more meaningful pace of life. It is a reminder that in the search for modern mental health and social stability, the most sophisticated answer might just be standing in the pasture, waiting for us to return.

Dr. Aastha Pathak

MOTHER COW AND HER GLORIOUS DIVERSITY

The mother cow holds a place of profound reverence in Indian civilization, where she is lovingly regarded as Gau Mata, a symbol of nourishment, patience, abundance, and harmony with nature. For thousands of years, the cow has not merely been an animal in the fields but a central figure in the moral, cultural, agricultural, and spiritual life of Bharat. The word "mother" signifies one who gives selflessly, sustains life, and asks for little in return. In this sense, the cow truly embodies motherhood. Her milk has nourished countless generations, becoming an essential part of daily nutrition in households across the nation. From a simple glass of warm milk at dawn to curd, butter, ghee, and paneer prepared in traditional kitchens, her gifts strengthen both body and mind. Ayurveda regards cow's milk and its products as satvik, promoting clarity, calmness, and vitality. Thus, the cow's contribution extends beyond physical nourishment into the realm of mental and spiritual well-being.

In Indian tradition, the cow is not viewed only in economic terms but as a sacred presence. Scriptures and epics speak of her with affection and respect, describing her as a symbol of prosperity and righteousness. The divine cow Kamadhenu is portrayed as the embodiment of abundance and generosity, reminding society of the principle of giving. The cultural connection deepens with the childhood stories of Krishna, who is depicted as a cowherd in the pastoral lands of Vrindavan. His playful companionship with cows expresses a relationship built on love, protection, and harmony between humans and animals. This imagery has inspired generations to treat the cow not merely as livestock but as a cherished member of the household. Festivals

such as Govardhan Puja and Gopashtami are celebrated with devotion, where cows are decorated, worshipped, and honored in gratitude for their role in sustaining life. These celebrations reinforce the spirit of thankfulness that lies at the heart of Indian culture.

One of the greatest treasures of Bharat is the extraordinary diversity of its indigenous cow breeds. Spread across varied geographical regions from the deserts of Rajasthan to the coastal plains of Gujarat and the fertile lands of Punjab each breed has adapted to its environment over centuries. This diversity reflects the ecological wisdom of traditional farming communities. The Gir cow of Gujarat, known for its distinctive curved horns and gentle temperament, thrives in hot climates and is admired for the richness of its milk. The Sahiwal breed from Punjab and Haryana is celebrated for its steady milk production and adaptability. In the arid landscapes of Rajasthan, the Tharparkar cow demonstrates remarkable resilience, capable of enduring challenging weather conditions while remaining productive. The Red Sindhi breed, with its characteristic reddish-brown coat, is valued for its strength and utility. Each of these breeds carries unique physical traits, colors, and capacities, yet

all share the nurturing quality that defines motherhood.

Indigenous cows are naturally suited to Indian climatic conditions. They are generally more resistant to local diseases and require less intensive care compared to many exotic varieties. Their ability to thrive in diverse environments from humid coastal belts to dry inland regions makes them a vital component of sustainable agriculture.

Preserving native breeds is therefore not only a matter of tradition but also of environmental balance and food security. Biodiversity within cattle populations ensures resilience against changing climates and agricultural challenges. In an era when the world seeks sustainable solutions, the traditional Indian model of cow-based rural life offers valuable lessons in ecological harmony.

The contribution of the cow to rural economy is immense. For millions of small farmers, dairy farming provides a steady source of income and financial stability. Milk collection centers and cooperative societies enable farmers, especially women, to participate actively in economic activities. This has strengthened rural self-reliance and improved household livelihoods. Cow dung plays a significant role in organic farming, enriching soil fertility naturally and reducing dependence on chemical fertilizers. Fields nourished with organic manure often show improved soil structure and long-term productivity. Cow dung is also used to produce biogas, providing a clean and renewable source of energy for cooking and lighting in villages. In this way, the cow supports a circular rural economy where nothing is wasted and every resource is utilized thoughtfully.

Beyond economics and agriculture, the cow nurtures social values. In villages, the daily act of feeding and caring for cows fosters discipline, compassion, and responsibility. Children learn empathy by interacting with animals and understanding their needs. The calm presence of cows in courtyards and grazing fields adds to the serenity of rural landscapes. Even in urban areas, gaushalas serve as centers of service and devotion, where people volunteer time and resources to ensure the well-being of cows. Such efforts strengthen community bonds and reinforce a culture of care.

The symbolism of the cow also carries a message of peaceful coexistence. She stands as a reminder that human prosperity is deeply connected with respect for nature. The gentle demeanor of the cow inspires ideals of non-violence, patience, and harmony. Her steady gaze and unhurried movements reflect a rhythm of life aligned with natural cycles rather than hurried modern pressures. In many households, offering the first portion of food to a cow is considered an act of gratitude and humility, acknowledging the interconnectedness of all living beings.

The diversity of the mother cow is not limited to breeds alone; it also includes the variety of roles she plays in different regions of India. In hilly terrains, plains, deserts, and forests, cows adapt to local practices and become integral to community identity. Different states celebrate their native breeds with pride, recognizing them as part of their cultural heritage. Agricultural fairs and exhibitions showcase these breeds, encouraging awareness and preservation. Scholars and farmers alike emphasize the importance of conserving indigenous cattle genetics for future generations.

In contemporary times, as society faces environmental concerns and lifestyle-related challenges, the traditional respect for the cow gains renewed relevance. Sustainable agriculture, organic food, renewable energy, and rural empowerment are all closely linked with cow-based practices. The mother cow thus represents continuity between ancient wisdom and modern needs. She reminds the nation that development can coexist with tradition, and progress can harmonize with nature.

In conclusion, the mother cow embodies the living spirit of Bharat—gentle yet strong, simple yet profound, nurturing yet resilient. Her milk sustains the body, her presence uplifts the spirit, and her diversity enriches the land. From sacred texts to village fields, from festivals to family kitchens, she remains an enduring symbol of gratitude and abundance. Honoring and preserving her diverse breeds and cultural significance is not merely a matter of faith; it is a commitment to ecological balance, rural prosperity, and moral values. The story of the mother cow is, in many ways, the story of India itself - rooted in compassion, sustained by diversity, and guided by reverence for life.

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं –

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली

खाता नम्बर – 04072010038910 IFSC CODE : PUNB0040710

नोट – शुल्क "भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद" के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011.26174732

pnb punjab national bank

...the name you can BANK upon!

अब आप यूपीआई के माध्यम से भी पत्रिका का शुल्क जमा कर सकते हैं

SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP

9958710672m@pnb

MERCHANT: BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

BHIM | UPI

BHARAT INTERFACE FOR MONEY UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

गोसम्पदा

नवल डागा, जयपुर
9460142430

पाचन शक्ति बढ़ाने के लिए – शाकाहार
सात्विक आहार बढ़ावे के लिए – शाकाहार
दीर्घकालीन पानी बचाने के लिए – शाकाहार
पर्यावरण व्यवस्थित रखने के लिए – शाकाहार
शरीर की आंतरिक मरम्मत के लिए – शाकाहार
भारतीय संस्कारों को बचाने के लिए – शाकाहार
तामसिक आहार को कम करने के लिए – शाकाहार
जीव–जगत की रक्षा व कल्याण के लिए – शाकाहार
मेटाबोलिज्म को व्यवस्थित करने के लिए – शाकाहार
डायबिटीज की आशंका कम करने के लिए – शाकाहार
अहिंसा परमो धर्मः की अलख जगाने के लिए – शाकाहार
व्रत–उपवास की पवित्रता कायम रखने के लिए – शाकाहार
समाप्त होते वन्यजीवों–पक्षियों के संरक्षण के लिए – शाकाहार
नैसर्गिक, शांतिमय, आनंदमय जीवन जीने के लिए – शाकाहार
मानव मात्र को जीव–हिंसा के पाप से बचाने के लिए – शाकाहार
जीव मात्र को जीने का अधिकार बनाए रखने के लिए – शाकाहार
सस्ता, पौष्टिक एवं सात्विक आहार ग्रहण करने के लिए – शाकाहार
भारतीय सभ्यता की सहज पहचान बनाए रखने के लिए – शाकाहार
उत्तेजना पर विजय पाने व संयम को प्रखर करने के लिए – शाकाहार
परस्परोपग्रहो जीवानाम के सिद्धांत का पालन करने के लिए – शाकाहार
भारतीय सभ्यता, अस्मिता और धर्म की रक्षा करने के लिए – शाकाहार
जीओ और जीने दो की भावना का प्रतिपालन करने के लिए – शाकाहार
शारीरिक ताकत मांसाहार से है, इस तर्क को मिटाने के लिए – शाकाहार
राम, गोविन्द, महावीर के आदर्शों को अंगीकार करने के लिए – शाकाहार

हनुमान
जन्मोत्सव
पर
हार्दिक
मंगल
कामनाएँ

लेखन में नीचे की जगह रोकने वाली पाँचों मात्राएँ ना होने से अक्षरों का आकार 34% से अधिक बड़ा हो गया है। अतः पढ़ने में स्पष्ट हैं।

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 अप्रैल, 2026

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक